सम्पादक की कलम से.....

रामअवतार बैरवा

शेष विधाएं: अशेष कथाएं

साहित्य महज़ चंद भावों, संवादों, संवेदनाओं और स्पंदन का नाम नहीं है । इसमें एक जीवन की वो संघर्ष छिपा होता हैं, जिससे व्यक्ति निखरता है, समाज बनता है, राष्ट्र को पहचान मिलती है और मानवीयता अपने उत्कर्ष की ओर बढ़ती है। वर्तमान सदी के आधे लोग संभवतः कविता और कहानी से इतर साहित्य को जानते भी नहीं होंगे। सोशल मीडिया पर भी 80 प्रतिशत तो कविताएं ही नज़र आती हैं, शेष में 10 प्रतिशत कहानियां और शेष में बचा हुआ साहित्य । सवाल अनगिनत हैं और जवाब देने वाले बहुत सीमित। शेष साहित्य जो लिखते रहे थे, उन्हें भी अब ये चिंता नहीं है कि इन विधाओं का क्या होगा, उनकी चिंता इतनी भर है कि कोई उनका लिखा पढ़ ले । ये भी सच है कि एक लेखक खुद को कवि या कथाकार कहलवाने में जितना फक्र महसूस करता है उतना नाटककार , रेखाचित्रकार, डायरी लेखन या संस्मरण लेखन में नहीं । इन सबके लिए उसे लेखक की उपाधि ज्यादा सहज लगती है । समीक्षक और व्यंग्यकार थोड़े से सम्मानित विशेषण अवश्य कहे जा सकते हैं। रूपक लिखना तो लोग लगभग भूल ही गए। ललित निबंध लिखने वाला एक - आध शायद ही बचा है । डायरी अब कोई रखता नहीं, लिहाजा डायरी लेखन भी खत्म ही समझो । आत्मकथा और जीवनी पर अनेक प्रश्न आ खड़े हुए हैं । भेंटवार्ता या साक्षात्कार को यदि साहित्य में शामिल किया जाता है तो इस विधा ने अवश्य गति पकड़ी है।

सबको कविता लिखना शायद इसलिए सहज लगता है कि गीत, ग़ज़ल, दोहा, नज़्म, रूबाइयां, मुक्तक, कुंडली, माहिया , हाइकु आदि सब इतने घल्ल-मल्ल हो चुके हैं कि लोग आसानी से दोहे से शेर, रूबाई से मुक्तक और माहिया से हाइकु बना लेते हैं। कहानियों का कथ्य तो हूबहू इधर-उधर किया जाता रहा है । शेष विधाओं की कठिनाइयां कोई भला क्यों मोल ले । अब उन्हें छपने की भी चिंता नहीं। अपना मोबाइल है , अपना सोशल मीडिया है। कुछ भी लिखो, कुछ भी कहो । दो सौ के आसपास तो सब लेखकों के जानकार होते ही हैं, उतने पसंद मिल जाने पर वह लेखक होने का भ्रम पाल लेता है । सबसे बड़ी बात यह है कि कोई राह दिखाने वाला नहीं। राह भी वो मोबाइल में ही गूगल से पूछते हैं, वह उन्हें वह ठीक- ठाक के आसपास की बात बता देता है पर मुकम्मल नहीं ।

ISSN:2583-8849

आधी-अधूरी जानकारी ही साहित्य की सबसे घातक सीढ़ी है। किताबों की दुनिया इंटरनेट के तिलिस्म में तब्दील हो चुकी है, जहां मैथिलीशरण गुप्त या हजारी प्रसाद द्विवेदी को खोजा जाए तो पहले अनचाहे चित्रों और खबरों से गुजरना होता है। नयी पीढ़ी सम्पन्नता के इसी चक्रव्यूह में बुरी तरह उलझ गयी है, बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं बचा है। पुरानी पीढ़ी अब उन्हें नामसझ दिखने लगी है। उन्हें इंटरनेट पर किसी को पैसे भेजना, टैक्सी बुक करना या कोई आवेदन करना नहीं आता। बात बराबर इसलिए है कि इनसे ये नहीं आता, उनसे वो नहीं आता। अगर बात की तह तक जाया जाए तो एक-एक बात में असंख्य बातें छिपी मिलेंगी। इस पीढ़ी के पास भले कोई रहबर भले न हो, इंटरनेट के जरिए ही इनमें साहित्य के संस्कार डालने होंगे। कविता और कथा में उलझे लेखकों को फिर से शेष विधाओं को साथ लेकर चलना होगा। डायरी लेखन को इंटरनेट पर लेखन से इसलिए नहीं जोड़ा जा सकता कि डायरी एक चित्र होता है, जो सम्पूर्णता को एक साथ बयां करता है, अन्य ताक-झांक बर्दाश्त नहीं होती। वह किसी उथले भाव की ओर नहीं जा सकता।

शेष विधाओं की एक बड़ी समस्या यह भी है कि अब उन विधाओं में बड़े लेखक रहे नहीं । महादेवी वर्मा के बाद रेखाचित्र और संस्मरण, विद्यानिवास मिश्र के बाद ललित निबंध, डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल के बाद नाटक, नामवर सिंह के बाद आलोचना, डॉ. रामदरश मिश्र हाल ही सौ बरस के हुए हैं (उन्हें साहित्य रत्न परिवार की ओर से बहुत शुभकामनाएं), उनके पास शेष विधाओं के साथ डायरी लेखन और ललित निबंध हैं और वो उनकी उम्र जितना ही निश्छल, निष्कपट और सत्य है। साहित्य को उसका लाभ लेना चाहिए। कथा, कविता, ग़ज़ल, उपन्यास, और शेष विधाओं के भी वो बहुत बड़े ज्ञाता हैं। इस उम्र में भी उनका लिखते रहना साहित्य के लिए गर्व की बात तो है ही , उनसे दिशा निर्देश लेते रहना साहित्य के हर कोणों के लिए शुभदायी है। जब रामदरश मिश्र ग़ज़ल लिखने लगे थे तो सबको हैरानी हुई थी मगर जब उनकी ग़ज़लें पढ़ी तो दंग रह गए। एक सितंबर दुष्यन्त कुमार जयंती पर रामदरश जी की ग़ज़ल के चंद शेर यहां रखना प्रासंगिक हैं -

जहाँ आप पहुँचे छलांगे लगाकर,
वहाँ मैं भी आया मगर धीरे-धीरे।

पहाड़ों की कोई चुनौती नहीं थी,
उठाता गया यूँ ही सर धीरे-धीरे।

ज़मीं खेत की साथ लेकर चला था,
उगा उसमें कोई शहर धीरे-धीरे।

मिला क्या न मुझको ए दुनिया तुम्हारी,
मोहब्बत मिली, मगर धीरे-धीरे।

सहजता के पीछे छिपे कठोर संघर्ष को प्रेरक शब्दों में बांध लेने वाला इस शायर पर निस्संदेह खुदा की असीम कृपा है। निस्संदेह वो बीसवीं और इक्कीसवीं दोनों सदियों के निष्कपट नायक रहे हैं । धीरे-धीरे ही सही दुनिया से उनकी ये मुहब्बत अभी और सौ बरस बरकरार रहे।